श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ७ शहर दिसम्बर - 2021

विद्यार्थी का नाम _____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१) कल्पोपन्न
(२) योनि
(३) पूर्ण कलश
(४) अज्ञान
(५) मुनि दर्शन
(६) कुसंस्कार
(७) समाधि मरण
(८) व्यापार
(९) अभयदान
(१०) छेदोपस्थापनीय
(११) मर्यादा
(१२) निर्जरा
(१३) दयाभाव
(१४) अकिंचन
(१५) नमोत्थुणं / शक्रस्तव
(१६) सद्गुरु
(१७) नेमिनाथ
(१८) वाण व्यंतर
(१९) माध्यस्थ

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१) हनुमान
(२) कौशांबी
(३) शक्र
(४) विणक
(५) हरिणगमेषी देव
(६) दया
(७) लोकस्वरूप
(८) सारसिका दासी
(९) परमाधामी
(१०) रति-अरति
(११) सुघोष गुरु
(१२) सामायिक
(१३) ग्रैवेयक
(१४) जिन-प्रवचन
(१५) पवित्रता

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१) अन्यत्व
(२) झुठा उलंड चढाना
(३) भवनपति
(४) भावनायें

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	१०
(२)	८	(७)	३
(३)	७	(८)	२
(४)	१	(९)	४
(५)	९	(१०)	५

(५) अंगीकार
(६) प्रसिद्ध / ख्याति
(७) दो प्रकार से
(८) ब्रह्मचर्य
(९) धर्म के
(१०) दूसरा
(११) क्षमा
(१२) असत्य बोलना
(१३) बोधि
(१४) आचरण
(१५) रहित
(१६) हे भगवंत
(१७) ज्योतिष
(१८) सुविहित
(१९) पाप वाला
(२०) आश्रव

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१) १७
(२) ७
(३) ८००
(४) १६२ (१६२)
(५) ४
(६) ४२
(७) २०
(८) ६
(९) ९
(१०) १०

	प्रश्न-६ ✓ या ×	प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	२३-२४
(२)	×	१९
(३)	×	३
(४)	×	७
(५)	✓	१८
(६)	✓	९
(७)	✓	१३
(८)	×	३
(९)	×	१५
(१०)	×	२४

(२०)

[ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] + [ ] = [ ]

प्रश्न-१ मिले हुए गुण | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | कुल गुण

रीमार्क _____ जांचनेवाले की सही _____

प्रश्न - ८

१. प्रभु महावीर की माता ने चौदह स्वप्नो देखे वह सुनकर स्वप्नपाठको ने राजा को कहा की आपको यह पुत्रलाभ के साथ साथ धन, सुख, भोग और राज्यलाभ होगा। जब से प्रभु गर्भ में संहरीत हुये, तब से राजा की रौप्य सुवर्ण से वृध्दी हुई है। धन धान्य के भंडार, रत्न मणि, मुक्ताफल, शंख, स्फटिक, प्रवाल इन सब से वृध्दि हुई है। स्वजनो का आदर सत्कार हो या विद्यमान श्रेष्ठ द्रव्यों से वृध्दी पायी है। इसलिये प्रभु के मातापिता यह अभिलाषा की जब पुत्र होगा तो इसका नाम वर्धमान होगा।

२. अठारह पापस्थानक का अर्थ इसप्रकार है - अन्य जीवहिंसा, झूंठ बोलना, पराई वस्तु बगैर पूछे लेना, या उसकी इच्छा करना, धन्य धान्य का संग्रह, गुस्सा अहंकार, कपट करके अन्य को ठगना, तृष्णा रखना, प्रीती चौदराजिक वस्तु पर रखना, जो नही चाहीये उसका तिरस्कार करना, झगडा करना, झुठा कलंक चढाना चुघली करना, सुख दुःख पर हर्ष या शोक करना। निंदा करना, छल करके लोगों को ठगाना, कुदेव कुगुरु कुधर्म मानकर उसकी चाह करना यह अठारह पापस्थानक है.

३. भवन में रहनेवाले देव भवनपति के नाम से जाने जाते है। ये देव दिखने में कुमार जैसे होते है और यह दस प्रकार है इनके पश्चात कुमार नाम जोडा जाता है। यह देव खिलाडी वृती के, सुंदर, आनंदी और शौकीन होते है। नरकवासो में नारकी जीव रहते है उनके बीच तेरह प्रतरो के मध्य मे स्थित बारह अंतरों मे उपर नीचे के अंतर छोडके शेष दस अंतरों मे जो भवन है उनमे रहनेवाले देव को भवनपती देव कहते है। असुरकुमार, नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युतकुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिशिकुमार, पवनकुमार, स्तनितकुमार यह प्रकार है।

४. यथाख्यात चारित्र - यह सर्व जीवलोक मे प्रसिध्द चारित्र है। यथा- यानी जैसा और ख्यात यानी कहा है वैसा संपूर्ण चारित्र यथाख्यात चारित्र है। जब कषायों के संपूर्ण क्षय अथवा उपशम होते ही साधुओ को यह अति विशुध्द चारीत्र की प्राप्ति होती है। जो वीतराग 11, 12, 13, 14 वे गुणस्थानक मे रहते है उन्हे यह चारित्र होता है। यह चारित्र का अनुपालन जो करता है वह जीव निश्चितरुप से मोक्ष प्राप्त कर अजरामर स्थान मोक्ष मे पाता है।

५. जैन धर्म मे जनम लेना यह किसी पूर्वभव के अच्छे कर्मो का फल है। तो इसी धर्म को समझकर हमे हमारे जीवन में से कठोरता और क्रूरता को बाहर निकालना पडेगा। और दया से रिश्ता जोडना पडेगा यह अवसर फिरसे नही मिलेगा इस अवसर का स्वागत कर दया को जीवन में अपनायेंगे तो जीवन धन्य, परमानंदी बन जायेगा। कठोरता क्रूरता को जीवन से हटाकर दया को जीवन मे लायेंगे तो हम आलोक में सुख, मरण में समाधि और परलोक मे सद्गति का अनुभव करेंगे